राष्ट्र निर्माता

चतरसिंह गेहलोत
(संपादक)

राष्ट्र निर्माता

(साझा संग्रह)

संपादक

चतरसिंह गेहलोत

PRACHI
DIGITAL PUBLICATION

Title : Rashtra Nirmata
Author : Chatarsingh Gehlot
Edition : 1st (August, 2023)
ISBN : 978-93-95391-75-7

Copyright © 2023, All Rights Reserved by Author

Published by

PRACHI
DIGITAL PUBLICATION

Regd. Add.: 254, Khuriyakhatta No. 10, Bindukhatta,
Lalkuan, Nainital - 262402, Uttarakhand, India
Website : www.prachidigital.in
E-mail : info@prachidigital.in
Contact : +91-976041-7980, 976041-8103

Printed by :
Techshresta Solutions Pvt. Ltd., Bengaluru - 560025, Karnataka

COPYRIGHT NOTICE

Copyright and all necessary rights of this published book and all the works / compositions included in the book are reserved by the author, so the book or any part of it or the composition is completely or partially electronic or mechanical (including film, serial, photographic, without the written permission of the author Recording, any newspaper-magazine or literary / news website or portal, or blog, PDF format, photocopy Or translation into another language) may not be republished, translated or transmitted in any manner by recording method or information collection and retrieval system or in any way. If a person or institution attempts to do so, they will be legally responsible for the costs and losses.

Disclaimer : This book is published with all possible efforts to make the content error-free after the author's consent. This publication is being sold on this condition and shall not be liable in any way to any person due to any mistake or omission of the author or publisher in the published book. In addition, the publisher declares that the pictures /images / illustration / abstract / clip art used on the cover and inner pages of the book have been made available by the author. Therefore, if the images used violate the copyright of any person or institution, the author will be solely responsible for it, for which the author gives full consent and agree under publishing agreement. That is, the publisher will not have any responsibility for such matters in the present or future.

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ सं0
1	राष्ट्र निर्माता	5
	संपादकीय	7
	चतरसिंह गेहलोत	9
2	आचार्य चाणक्य	10
3	स्वामी विवेकानन्द	16
4	स्वामी दयानंद सरस्वती	21
5	मुंशी प्रेमचंद कालजयी कहानियों के निर्माता	25
6	पंडित मदनमोहन मालवीय	29
7	डॉ...ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	35
8	द्रौपदी मुर्मू	44
9	रविंद्र नाथ टैगोर का शिक्षा दर्शन	47
	हरिदास बड़ोदे 'हरिप्रेम'	50
10	राष्ट्र निर्माता – ज्योतिबा फुले	51
	डॉ. के. अनिता	55
11	राष्ट्र निर्माता– डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन	56
	डा0 भारती वर्मा बौड़ाई	62
12	कलाम का वंश चलता रहेगा	63
13	मैं शिक्षक हूँ!	65

14	विवेकानन्द	67
15	खिले तुम्हीं से पुनः धरा	68
16	विवेकानंद होने का अर्थ	69
17	मैं विवेकानंद!	70
18	आदि गुरु शंकराचार्य जी	72
19	भारतीयता के प्रतीक स्वामी विवेकानंद	74
20	चाणक्य और उनकी नीतियाँ	78
	डॉ... वीके सिंह चौरसिया	82
21	गिजुभाई बधेका : शिक्षा दर्शन	83
	भारत गहलोत	86
22	रामकृष्ण परमहंस	87
23	सावित्री बाई फुले	88
24	चाणक्य प्रतिज्ञा	89
	सुश्री नेहा दुबे	90
25	सावित्रीबाई फुले जीवन दर्शन	91
	अनीता रावत	94
26	सावित्रीबाई फुले समग्र दर्शन	95
	पल्लवी शर्मा	97
27	राष्ट्र निर्माता (काव्य लेखन)	98
	मीनाक्षी यादव	99
28	शिक्षक	100
29	माता –एक शिक्षक	101
30	महर्षि दयानंद सरस्वती	103
	डॉ. विजया भारती जेल्दी	105
31	आंध्र प्रदेश के समाज सुधारक श्री कंदुकूरी वीरेशलिंगम	106

आंध्र प्रदेश के समाज सुधारक श्री कंदुकूरी वीरेशलिंगम

श्री वी ए सत्यनारायणा
तेलुगू प्राध्यापक
जी डी सी एलमंचिली
अनकापल्ली जिला
आंध्र प्रदेश

डॉ . .जे विजया भारती
प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
आंध्र विश्वविद्यालय
विशाखापट्टनम आंध्र प्रदेश

कंदुकूरी वीरेशलिंगम आंध्र प्रदेश के महान समाज सुधारक माने जाते हैं। तेलुगू भाषा एवं साहित्य में परिवर्तन लाने का भी श्रेय इन को मिलता है। कठिन और दुरूह शब्दों को छोड़ सरल और सुबोध शब्दों का प्रयोग कर सामान्य जनता तक इन्होंने अपनी रचनाएँ पहुंचाई। गद्य की विधाएँ उपन्यास, नाटक आदि के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक कुप्रथाओं का खंडन किया। पत्रिकाओं के संचालक के रूप में लोगों को उन दुराचारों के प्रति सचेत किया। 19वीं शताब्दी के द्वितीयार्ध में पूरे भारत में सांस्कृतिक पुनर्विकास, राष्ट्रीय पुनर्जागरण, सामाजिक पुनर्निर्माण का दौर चल रहा था। स्वतंत्रता संग्राम की लहरें उठ रही थी। अंग्रेजों के शासन का प्रभाव देश के हर वर्ग पर पड़ा। विशेषकर देश के बुद्धिजीवी इस विषय पर विचार विमर्श करने लगे। वर्षों से समाज में गढे हुए सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाने की ओर सारे बुद्धिजीवी अग्रसर हुए। यह समाज के लिए शुभ परिणाम था।

16 अप्रैल 1848 को राजमंदरी में कंदुकूरी का जन्म हुआ। पुन्नम्मा जी और सुब्बारायुडु जी इनके माता-पिता थे। कंदुकूरी वीरेशलिंगम जब 4 वर्ष के थे तब उनके पिताजी का देहांत हो गया था। विद्याध्ययन केलिए उन्होने कई कठिनाइयों का अनुभव किया। कई उतार-चढ़ाव देखें। फिर भी हर कक्षा में वे अव्वल आते रहे। बाल्यकाल में ही कंदुकूरी जी ने बाल रामायणं, अमराकोशम्, रुक्मिणी कल्याणम्, सुमति शतकम् आदि ग्रंथों का अध्ययन किया। 1861 में जब कंदुकूरी जी 13 वर्ष के थे तब 8 वर्षीय राज्य लक्ष्मी जी से इनका का विवाह संपन्न हुआ। इन्होंने ही अपनी पत्नी का विद्याध्ययन करवा कर उन्हें शिक्षित बनाया। तब, जब भारतीय समाज स्त्री शिक्षा के विरोध में था और लड़कियों को शिक्षित करना अनावश्यक समझा जाता था। राज्य लक्ष्मी जी भी अपने पति के साथ कदम से कदम मिलाती हुई आजीवन उनकी सहायक बनी रही।

मैजिस्ट्रेट जैसे पदों के लिए योग्यता प्राप्त करने के बावजूद वीरेशलिंगम जी ने उन पदों को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उनका मानना था कि उच्च स्तरीय पदों में हेरा फेरी और कई प्रकार

के अन्याय होने की संभावनाएँ हैं। आखिरकार अध्यापन को ही उन्होंने अपने जीविका का मार्ग चुना क्योंकि अध्यापक पद पवित्र होता है औरअध्यापन में जो आनंद और सुकून प्राप्त होता है वह और कहीं नहीं प्राप्त हो सकता। एक वरिष्ठ तेलुगू पंडित के रूप में अध्यापन क्षेत्र में कई दिग्गजों की प्रशंसा के पात्र बने। बाल्यकाल से ही वीरेशलिंगम समाज सुधार के बारे में विचार किया करते थे। अपने सह अध्यापकों से इस बारे में चर्चाएँ भी किया करते थे और ब्रह्म समाज के बारे में जानने का प्रयास किया करते थे। राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, केशव चंद्र सेन, रवींद्रनाथ ठाकुर जैसे महान साहित्यकारों की रचनायें पढ़कर वे उत्तेजित हुए। ब्रह्म समाज पर उनका विश्वास जगा। इन महान मनीषियों के भाषण के द्वारा कंदुकूरी जी को अपने कर्तव्य का बोध हुआ। बड़ों के व्याख्यान उनकी रचनाएं कंदुकूरी जी के विचारों को कार्य रूप देने में सहायक सिद्ध हुई।

समाज सुधार की तीव्र अभिलाषा के कारण कंदुकूरी जी ने अपने अध्यापक पद को भी त्याग दिया। अपना सारा जीवन समाज सेवा, साहित्य की श्री वृद्धि, पत्र-पत्रिकाओं की सेवा के लिए ही अर्पित कर दिया। कई राष्ट्रवादी, स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने की ओर अग्रसर हो रहे थे, तो कंदुकूरी जी ने समाज सुधार को ही देश के प्रति अपना कर्तव्य समझा। अंधविश्वास और कुरीतियों से जकड़े हुए इस समाज को सुधारना ही अपना परम धर्म माना। सच्चे अर्थों में अपनी देशभक्ति दिखाई। उनका मानना था कि समाज में अगर सुधार ना आए, सामाजिक रुग्मताओं से लोगों को छुटकारा न मिले तो स्वतंत्रता प्राप्त करने के बावजूद कोई विशेष लाभ नहीं होगा।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नवजागरण का शुभारंभ हुआ। इसके कारण थे अंग्रेज, अंग्रेजो के द्वारा प्राप्त पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति तथा अंग्रेजी साहित्य। शिक्षा क्षेत्र में हुए बुनियादी परिवर्तन और जनजागृति ही नवजागरण का मुख्य आधार बना। राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, केशव चंद्र सेन जैसे भारतीय समाज सुधारकों ने अंग्रेजों की नई शिक्षा नीति का समर्थन किया। इसका प्रभाव देश के विभिन्न प्रदेशों के साहित्यकार और समाज सुधारकों पर देखा जा सकता है। उदाहरणार्थ हिंदी के भारतेंदु और उनकी मंडली के लेखक तथा तेलुगु के कंदुकूरी और उनके समकालीन लेखक। कंदुकूरी जी ने भारतीय समाज में स्थित धार्मिक कट्टरता एवं रूढ़िवादिता, अंधविश्वास एवं बाह्याडंबरों का जमकर विरोध किया और लोगों में नव चेतना विकसित की। वर्ण व्यवस्था, जाति प्रथा, अस्पृश्यता आदि कुप्रथाओं का खंडन कर उन पर पुनर्विचार करने की प्रेरणा प्रदान की। तत्कालीन समाज में व्याप्त बाल विवाह, बहु विवाह, अनमेल विवाह, कन्या शुल्क, सती प्रथा, वेश्या प्रथा आदि सामाजिक दुराचारों का विरोध किया।

उन्होंने स्त्री शिक्षा का समर्थन किया। 1874 कुछ लोगों के साथ मिलकर धवलेश्वरम में बालिका विद्यालय की स्थापना की। इनका मानना था कि पुरुष अपने स्वार्थ के लिए ही स्त्री शिक्षा का विरोध करते आए हैं। 1875 में राजमुंदरी में बसावाराजु गवर्राजू नामक सामाजिक सेवक से वीरेसलिंगम जी का परिचय प्राप्त हुआ। इन्होंने "देश भाषा पाठशाला" नामक विद्यालय की स्थापना की। इस विद्यालय में वीरेश लिंगम जी हर रविवार को विशिष्ट व्याख्यान दिया करते थे और इनके व्याख्यान सुनने कई लोग आया करते थे। 1878 में कंदुकूरी जी ने "संघ संस्करण समाजं" की स्थापना की।

1879 में इन्होंने विधवा पुनर्विवाह के बारे में पहली बार राजमंदरी में व्याख्यान दिया।"वितंतु विवाह संघम" की स्थापना की। इस संस्था की ओर से 18 81 मैं एक बैठक का प्रबंध किया गया। इस बैठक में विधवा विवाह के बारे में चर्चा हुई। कंदुकूरी जी ने अपनी वाक्पटिमा से रूढ़िवादियों की बोलती बंद कर दी और उन पर विजय प्राप्त किया। 11 दिसंबर 18 81 को राजमंदरी में पहला विधवा विवाह करवाया। उस समय विधवाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। ऐसे में वीरेशलिंगम जी ने उन्हें समाज में उनका अपना स्थान दिलवाया। 40 से भी अधिक विधवा विवाह करवाएँ। इस कारण उनकी जाति वालों ने उनका बहिष्कार किया। ऐसे में उनकी पत्नी राज्य लक्ष्मी जी ने अपना पूर्ण सहयोग दिया। इतना ही नहीं किसी कारणवश पतित बनी स्त्रियों के उद्धार के लिए पतितोद्धारणालय, अनाथों केलिए अनाथ शरणालय का निर्माण कराया।

कंदुकूरी जी ने अपने जीवन काल में शताधिक ग्रंथों की रचना की। उनमें से चार उपन्यास, तेरह नाटक, तीन एकांकी 39 प्रहसन और अन्य गद्य के विविध विधाओं में की गई रचनाएं हैं। उनका प्रथम उपन्यास था "राजशेखर चरित्रा"। यह "गोल्डस्मिथ" के द्वारा रचित "विकार ऑफ वैकफील्ड" नामक अंग्रेजी उपन्यास के आधार पर लिखा गया था। इस उपन्यास के बारे में कंदुकूरी जी कहते हैं कि "यह उपन्यास केवल अनुकरण मात्र ही है अनुवाद नहीं है। हमारे समाज में निहित अंधविश्वासों को दूर करने के उद्देश्य से यह रचा गया है।" इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं राजशेखर। यह संपन्न और कुलीन परिवार के हैं। दानी है, भले हैं, भोले हैं। हर किसी पर विश्वास करते हैं सबको अपने जैसे मानते हैं। मंदिरों में पूजा के विधि विधान के लिए त्योहारों के लिए आदि अन्य संदर्भों लिए धन का अत्यधिक व्यय करते हैं। उनके इन गुणों के कारण सगे संबंधी ही उनको धोखा देते हैं। कई लोग उन्हें कई प्रकार से बहकाते हैं। इस उपन्यास में कंदुकूरी जी ने समाज में स्थित रिती रिवाज, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास, शुभ नक्षत्र आदि को दिखाना, मंत्र तंत्र, गरीबी, चोरी, मंदिर, व्रत आदि, धर्म के नाम पर धोखेबाजी, बाल विवाह, ढोंगी बाबा, ढोंगी

फकीर आदि अनेक विषयों का सजीव चित्रण किया है। उपन्यासकार ने उपन्यास में समस्याओं को दिखाते हुए उनका समाधान भी सुझाया है। यही कंदुकूरी जी की विशिष्टता है। "सत्या राजा पूर्व देश यात्रालू" इनका द्वितीय उपन्यास है। यह एक व्यंग्य प्रधान उपन्यास है। इस में कंदुकूरी जी ने आंध्रों की रूढ़िगत परंपराएँ एवं अंधविश्वासों के कारण नारी जीवन के शोषण पर खुलकर प्रहार किया है। यह "जोनाथन स्विफ्ट" कृत "गुलिवर ट्रावेल्स" की प्रेरणा से लिखा उपन्यास है। इस में नारी की तत्कालीन वास्तविक स्थिति को ऐसा दिखाया गया है कि जैसे पुरुषों के साथ वे सारे अत्याचार किए गए हों। तीसरा उपन्यास है "सत्यवती चरित्र"। यह एक संपूर्ण पारिवारिक उपन्यास है। कंदुकूरी जी ने तत्कालीन पारिवारिक व्यवस्था का हू-ब-हू चित्रण किया है। रिश्तों के बीच का खटास अर्थात सास-बहू, ननद-भाभी, जेठानी - देवरानी के संबंधों में जो अहंकार, क्रोध, द्वेष आदि मानसिक रुग्मताओं का, परिवार की आर्थिक व्यवस्था का सविस्तार चर्चा किया है। शिक्षित नारी अपने पारिवारिक जीवन में कैसे सुधार ला सकती, इस का भी चित्रण इस उपन्यास में देखा जा सकता है।

वीरेशलिंगम जी के कलम से अनेक सामाजिक तथा पौराणिक नाटक मौलिक एवं अनूदित रची गईं हैं। अपनी प्रत्येक रचना के द्वारा तत्कालीन समाज में स्थित दुराचारों पर ही उन्होंने वार किया है। "प्रहसन" जो दशविध रूपकों में एक है, इस विधा में कंदुकूरी जी ने कई रचनाएं की। यह एक व्यंग्य प्रधान विधा है। व्यंग्य के माध्यम से समाज को जागृत करने का इन्होंने भरसक प्रयास किया है। सामाजिक कुरीतियों पर, आचार-व्यवहारों पर, दुर्नीति पर खुलकर प्रहार किया है। निस्वार्थ भाव से समाज में सुधार लाने का प्रयास किया है। कटु शब्दों का प्रयोग कर समाज को स्थिति की गंभीरता का एहसास कराना चाहा, ताकि लोगों में सुधार ला सके, भले - बुरे की समझ उनमें जागृत कर सके।

"आंध्र कवुल चरित्रा" के द्वारा कंदुकूरी जी ने विशेष विख्याति प्राप्त की है। इस ग्रंथ की रचना के लिए इन्होंने मद्रास एवं मैसूर में स्थित शिला शासन एवं ताम्र शासनों पर अनुसंधान किया, ताल पत्रों की प्रतियों का निरीक्षण किया। इस ग्रंथ को पूर्ण करने में इनको तीस वर्ष लगे। कइयों ने इस ग्रंथ की प्रशंसा की, कुछ ने इसकी आलोचना की तृटियों को दिखाया। वीरेशलिंगम जी अपने अंतिम श्वास तक कठिन परिश्रम कर इस ग्रंथ को संवारने में ही अपना समय व्यतीत किया। इन्होंने अपनी आत्मकथा को "स्वीय चरित्रा" नाम से लिपिबद्ध किया। उनके मित्र, हितैषी एवं प्रशंसकों ने उन्हें प्रेरित किया। इसके संबंध में उन्होंने अपने ग्रंथ की भूमिका में लिखा है कि "कार्य कर दिखाने की चिंता के अलावा अपने संबंध में जनता को बताने की चाह मेरे अंदर कभी भी नहीं

थी।" आत्मकथा को उन्होंने दो भागों में प्रकाशित करवाया। प्रथम भाग में अपने व्यक्तिगत जीवन के साथ साथ सामाजिक विषयों की भी चर्चा हुई – महिलाओं के विकास में उनका योगदान अर्थात बाल्य विवाह का विरोध, नारी शिक्षा का समर्थन, विधवा पुनर्विवाह आदि। द्वितीय भाग में अपनी रचनाओं के बारे में चर्चा की जिसमें उन्होंने बताया कि ग्रंथों की रचना कितना कष्ट साध्य है। समाज पर उनकी रचनाओं के प्रभाव के कारण हुए प्रयोजनों को विशद रूप से बताया। बाल्यकाल से लेकर उंनमें समय-समय पर जो परिवर्तन आए उस का जिक्र हुआ। अपने जीवन में राज्य लक्ष्मी जी की भूमिका पर लिखते हुए कहा कि उन्होंने जो सहयोग दिया है, वह कभी न भुलाने वाला है। अनेक अन्य ग्रंथों की भी रचना उन्होंने की।संपादक के रूप में भी वीरेशलिंगम जी ने कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया और कइयों के मार्ग दर्शक बने। विवेक वर्धिनी, हास्य संजीवनी, सती हित बोधिनी, चिंतामणि आदि पत्रिकाओं का संपादकीय भार उन्होंने वहन किया। अपनी पत्रिकाओं में उन्होंने सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं नैतिक विषयों को स्थान दिया। सामाजिक कुरीतियों तथा अंधविश्वासों के विरुद्ध आवाज उठाई। तेलुगू पत्रकारिता के क्षेत्र में कंदुकूरी जी ने असंख्य सेवाओं को प्रदान किया तदर्थ इस क्षेत्र में विशिष्ट स्थान को अर्जित किया।

अत: कंदुकूरी वीरेशलिंगम जी के बारे में यही कहा जा सकता है कि वे एक निष्ठावान समाज सुधारक, श्रेष्ठ साहित्यकार, कुशल पत्रकार एवं स्त्री जनोद्धारक के रूप में समाज में सुधार लाने का हर संभव प्रयास किया है। समाज सुधार केलिए इनके प्रयास को देखकर इनके मित्र और आत्मीय इन्हें आंध्र के राजा" राममोहन राय "कहा करते थे और साहित्यिक प्रतिभा केलिए "गद्य तिक्कना"।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नवयुग वैतालिकुडु कंदुकूरी – प्रोफेसर वेलमल सिम्मन्ना
2. आधुनिक तेलुगू साहित्य – डॉ पी वी नरसा रेड्डी
3. तुलनात्मक साहित्य – डॉ. बी चंद्र शेखर रेड्डी
4. तेलुगु साहित्य चरित्र – प्रोफेसर वेलमल सिम्मन्ना।
5. विकीपीडिय